म.प्र. राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
सा विद्या या विमुक्तये

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें
मध्य प्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल

TESS India

प्रारंभिक अंग्रेज़ी

पढ़ने का माहौल कैसे बनाएँ

भारत में विद्यालय
समर्थित शिक्षक-शिक्षा
www.TESS-India.edu.in

http://creativecommons.org/licenses/

The Open University

UKaid
from the British people

एस.आर.मोहन्ती
अपर मुख्य सचिव

अ.शा.पत्र क्र R.S.K/10
दूरभाष कार्यालय - 0755-4251330
मध्यप्रदेश शासन
स्कूल शिक्षा विभाग
मंत्रालय, वल्लभ भवन, भोपाल-462 004
भोपाल, दिनांक 20-1-2016

संदेश

प्रिय शिक्षक साथियों,

बच्चों की शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण और रोचक बनाने के लिए स्कूल शिक्षा विभाग निरन्तर प्रयासरत् है। आप सभी के प्रयासों से शिक्षकों के शिक्षण कौशल में भी निखार आया है और शालाओं में कक्षा शिक्षण भी आंनददायी तथा बेहतर हुआ है।

इसी दिशा में शिक्षकों को बाल केन्द्रित शिक्षण की ओर उन्मुख करने और शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के उद्देश्यों को लेकर, TESS India द्वारा मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) का विकास किया गया हैं। इनका उपयोग शिक्षण कार्य में सहजता व सुगमतापूर्वक किया जा सकता है। आशा है कि ये संसाधन, शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन और क्षमतावर्द्धन में लाभकारी और उपयोगी सिद्ध होंगे।

राज्य शिक्षा केन्द्र के संयुक्त तत्वाधान में TESS India द्वारा स्थानीय भाषा में तैयार किये गये मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) को www.educationportal.mp.gov.in पर भी उपलब्ध कराया गया हैं। आशा है इन संसाधनों के उपयोग से प्रदेश के शिक्षक और शिक्षक प्रशिक्षक लाभान्वित होंगे और कक्षाओं में पठन पाठन को रूचिकर और गुणवत्तायुक्त बनाने में मदद मिलेगी।
शुभकामनाओं सहित,

(एस.आर.मोहन्ती)

दीप्ति गौड मुकर्जी
आयुक्त
राज्य शिक्षा केन्द्र एवं
सचिव
मध्यप्रदेश शासन
स्कूल शिक्षा विभाग

अर्द्ध शा. पत्र क्र. : 8
दिनांक : 12-1-16
पुस्तक भवन, वी-विंग
अरेरा हिल्स, भोपाल-462011
फोन : (का.) 2768392
फैक्स : (0755) 2552363
वेवसाइट : www.educationportal.mp.gov.in
ई-मेल : rskcommmp@nic.in

संदेश

प्रिय शिक्षक साथियों,

सभी बच्चों को रूचिकर और बाल केन्द्रित शिक्षा उपलब्ध हो इसके लिए आवश्यक है कि हमारे शिक्षकों को शिक्षण की नवीनतम तकनीकों और शिक्षण विधियों से परिचित कराया जाए साथ ही इन तकनीकों के उपयोग के लिए उन्हे प्रोत्साहित भी किया जाए। TESS India द्वारा तैयार किये गये मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) के उपयोग से शिक्षक शिक्षण प्रविधि के व्यावहारिक उपयोग को सीख सकते हैं। इनकी सहायता से शिक्षक न केवल विषय वस्तु को सुगमता पूर्वक पढ़ा सकते हैं बल्कि पठन पाठन की इस प्रकिया में बच्चों की अधिक से अधिक सहभागिता भी सुनिश्चित कर सकते हैं।

राज्य शिक्षा केन्द्र स्कूल शिक्षा विभाग ने स्थानीय भाषा में तैयार किये गये इन मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) को अपने पोर्टल www.educationportal.mp.gov.in पर भी उपलब्ध कराया है।

आशा हैं, कि आप इन संसाधनों का कक्षा शिक्षण के दौरान नियमित रूप से उपयोग करेंगे और अपने शिक्षण कौशल में वृद्धि करते हुए बच्चों की पढ़ाई को आनंददायक बनाने का प्रयास करेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

(दीप्ति गौड़ मुकर्जी)

शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

टेस–इण्डिया स्थानीयकृत ओईआर निर्माण में सहयोग

मार्गदर्शन एवं समीक्षा :
श्रीमती स्वाति मीणा नायक, अपर मिशन संचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एच. के. सेनापति, प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. ओ.पी.शर्मा, अपर संचालक, मध्यप्रदेश एससीईआरटी
डॉ. अशोक कुमार पारीक उपसंचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री आर. पी. त्रिपाठी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
प्रो.जयदीप मंडल, विभागाध्यक्ष विज्ञान एवं गणित शिक्षा संकाय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. आर. रायजादा, सहप्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष विस्तार शिक्षा, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. वी.जी. जाधव, से.नि. प्राध्यापक भौतिक, एनसीईआरटी
डॉ. के. बी. सुब्रमण्यम से.नि. प्राध्यापक गणित, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. आई. पी. अग्रवाल से.नि. प्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. अश्विनी गर्ग सहा. प्राध्यापक गणित संकाय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. एल. के. तिवारी, सहप्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
श्री एल.एस.चौहान, सहा. प्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. श्रुति त्रिपाठी, सहा. प्राध्यापक अंग्रेजी, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. रजनी थपलियाल, व्याख्याता अंग्रेजी, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. मधु जैन, व्याख्याता शास. उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल
डॉ. सुशोवन बनिक, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. सौरभ कुमार मिश्रा, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
श्री. अजी थॉमस, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. राजीव कुमार जैन, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
स्थानीयकरण :
भाषा एवं साक्षरता
डॉ. लोकेश खरे, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एम.एल. उपाध्याय से.नि. व्याख्याता शास. उत्कृष्ट उ.मा.विद्यालय मुरैना
श्री रामगोपाल रायकवार ,कनि. व्याख्याता, डाइट कुण्डेश्वर, टीकमगढ़
डॉ. दीपक जैन अध्यापक, शास. उत्कृष्ट उ.मा.विद्यालय क्र 1 टीकमगढ़
अंग्रेजी
श्री राजेन्द्र कुमार पाण्डेय, प्राचार्य, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्रीमती कमलेश शर्मा. डायरेक्टर , ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री हेमंत शर्मा, प्राचार्य, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री मनोज कुमार गुहा वरि. व्याख्याता, एससीईआरटी. मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एफ.एस.खान, वरि.व्याख्याता, प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान (आईएएसई) भोपाल
श्री सुदीप दास, प्राचार्य, शास.उ.मा.विद्यालय दालौदा, मन्दसौर
श्रीमती संगीता सक्सेना, व्याख्याता, ,शास.कस्तूरबा कन्या उ.मा.विद्यालय भोपाल
गणित
श्री बी.बी. पी. गुप्ता, समन्वयक गणित, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री ए. एच. खान प्राचार्य शास.उ.मा.विद्यालय रामाकोना, छिंदवाड़ा
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद गुप्त , प्राचार्य शास. जीवाजी ऑब्जर्वेटरी उज्जैन
डॉ.आर,सी. उपाध्याय, वरि. व्याख्याता, डाइट, सतना
डॉ. सीमा जैन, व्याख्याता, शास. कन्या उ.मा.विद्यालय गोविन्दपुरा, भोपाल
श्री सुशील कुमार शर्मा, शिक्षक, शास. लक्ष्मी मंडी उ.मा.विद्यालय, अशोका गार्डन, भोपाल
विज्ञान
डॉ. अशोक कुमार पारीक उपसंचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
डॉ. सुसम्मा जॉनसन, व्याख्याता एस.आई.एस.ई. जबलपुर मध्यप्रदेश
डॉ.सुबोध सक्सैना, समन्वयक एससीईआरटी मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
श्री आर. पी. त्रिपाठी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री अरूण भार्गव, वरि. व्याख्याता, एससीईआरटी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
श्रीमती सुषमा भट्ट, वरि.व्याख्याता, एससीईआरटी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री ब्रजेश सक्सेना, प्राचार्य, एससीईआरटी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. रेहाना सिद्दकी से.नि. व्याख्याता सेन्ट फ्रांसिस हा. से. स्कूल भोपाल

*TESS-India (*विद्यालय समर्थित शिक्षक शिक्षा*)* का उद्देश्य मुक्त शैक्षिक संसाधनों की सहायता से भारत में प्रारंभिक और सेकेण्डरी शिक्षकों के कक्षा अभ्यास व कक्षा निष्पादन को सुधारना है जिसमें वे इन संसाधनों की सहायता से विद्यार्थी-केंद्रित, सहभागी दृष्टिकोणों का विकास कर सकें। टेस इंडिया के मुक्त शैक्षिक संसाधन शिक्षकों के लिए स्कूल पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त,सहयोगी पुस्तिका या संसाधन की तरह हैं। इसमें शिक्षकों के लिए कुछ गतिविधियां दी गई हैं जिन्हे वे कक्षाओ में विद्यार्थियों के साथ प्रयोग में ला सकते हैं, इसके साथ साथ कुछ केस स्टडी दी गई हैं जो यह बताती हैं कि कैसे अन्य शिक्षकों ने पाठ्य विषय को कक्षाओं में पढ़ाया और अपनी विषय संबंधी जानकारियों को बढ़ाने तथा पाठ योजनाओं को तैयार करने में संसाधनों का उपयोग किया।

TESS-India OER भारतीय पाठ्यक्रम और संदर्भों के अनुकूल भारतीय तथा अंतर्राष्ट्रीय लेखकों के सहयोग से तैयार किये गये है और ये ऑनलाइन तथा प्रिंट रूप में उपयोग के लिए उपलब्ध हैं *(http://www.tess-india.edu.in)*। *OER* कार्यक्रम से जुड़े प्रत्येक भारतीय राज्य के शिक्षकों के उपयोग के लिए उपयुक्त तथा कई संस्करणों में उपलब्ध हैं तथा शिक्षक व उपयोगकर्ता इन्हे अपनी स्थानीय आवश्यकताओं और सन्दर्भों के अनुरूप इनका स्थानीय करण करके उपयोग कर सकते हैं।

प्रस्तुत संस्करण मध्यप्रदेश की स्थानीय आवश्यकताओं और संदर्भों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है।

वीडियो संसाधन

इस इकाई में कुछ गतिविधियों के साथ यह आइकॉन दिया गया है*:* *.* इसका अर्थ है कि आप उक्त विशिष्ट विषयवस्तु या शैक्षणिक प्रविधि को और अधिक समझने के लिए *TESS-India* के वीडियो संसाधनों की मदद ले सकते हैं।

TESS-India वीडियो ससांधन (Resources) भारतीय परिप्रेक्ष्य में कक्षाओं में उपयोग की जा सकने वाली सीखने–सिखाने की विविध तकनीकों को दर्शाते हैं। हमें यकीन है कि इनसे आपको इसी प्रकार की तकनीकें अपनी कक्षा में करने में मदद मिलेगी। यदि इन वीडियो संसाधनों तक आपकी पहुँच नहीं हो तो कोई बात नहीं। यह वीडियो पाठ्यपुस्तक का स्थान नहीं लेते, बल्कि उसको पढ़ाने में आपकी मदद करते हैं।

TESS-India के वीडियो संसाधनों को *TESS-India* की वेबसाइट *http://www.tess-india.edu.in/* पर ऑनलाइन देखा जा सकता है या डाउनलोड किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त आप इन वीडियो को सीडी या मेमोरी कार्ड में लेकर भी देख सकते हैं।

संस्करण 2.0 EE08v2
Madhya Pradesh
तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है*: http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3*
TESS-India is led by The Open University UK and funded by UK aid from the UK government

यह इकाई किस बारे में है

यह इकाई पढ़ने के आनंद पर केंद्रित है। यदि *विद्यार्थी* अंग्रेज़ी पढने को केवल भाषा अभ्यास और परीक्षाओं से जोड़ते हैं तो इस बात की संभावना कम है कि वे न्यूनतम आवश्यकता से ज्यादा अंग्रेज़ी सीख सकेंगे। लेकिन यदि वे अंग्रेज़ी पढ़ने में मजा लेने लगे तो हो सकता है कि वे आजीवन अंग्रेजी पढ़ने वाले हो जाएँ।

आपके *विद्यार्थी* अंग्रेज़ी और हिन्दी में पढ़ना सीखना चाहेंगे। यहां जिन विचारों और विधियों पर चर्चा की गई है वे किसी भी भाषा में पठन के लिए प्रासंगिक हैं। इसलिए जब आप इस ईकाई को पढ़ें तो यह सोचें कि आप किस तरह हिन्दी और अन्य स्थानीय भाषाओं के साथ-साथ अंग्रेज़ी में भी आनंददायक पठन के लिए गतिविधियों को आज़मा सकते हैं। इस बारे में भी सोचें कि यहां जिन रणनीतियों के बारे में चर्चा की गई है वे आपकी कक्षा में अलग अलग क्षमताओं वाले विद्यार्थियों के लिए किस तरह प्रभावी होंगी।

इस इकाई से आप क्या सीख सकते हैं

- अंग्रेज़ी पढ़ने में मजा कैसे आता है।
- कक्षा के पुस्तकालय का विकास करना।
- विद्यार्थियों के लिए पठन कला का रोल-मॉडल बनना।

1 पढ़ने का माहौल तैयार करना

उन कार्यों के बारे में सोचें जिन्हें आप आनंद के लिए पठन को आगे बढ़ाने के लिए पहले से ही करते आ रहे हैं।

गतिविधि 1: आपके विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए प्रेरित करना
आपके विद्यार्थियों के पठन कौशल का स्तर चाहे जो भी हो लेकिन उन्हें प्रतिदिन आनंददायक पठन का अनुभव करने के अवसर देना एक अच्छा अभ्यास है। यह महत्वपूर्ण है कि *विद्यार्थी* वास्तव में पढ़ने की इच्छा या ललक से प्रेरित हों। यहां ऐसी पांच मुख्य गतिविधियों के बारे में बताया गया है जो आप कर सकते हैं: 1. अपने विद्यार्थियों को दिखाएं कि आप खुद भी एक पाठक हैं। इस बारे में बात करें कि आपको क्या पढ़ना पसंद है और उनके साथ कुछ उपयुक्त उदाहरणों की बात करें। 2. अपनी कक्षा में पुस्तकों का एक कोना बनाकर पढ़ने का वातावरण तैयार करें। 3. कक्षा में थोड़ा समय ऐसा निकालें जिसमें भाषा कौशल और परीक्षाओं के लिए नहीं बल्कि केवल आनंद के लिए ऊंची आवाज़ में पढ़ा जाए। 4. अपने विद्यार्थियों से इस बारे में बात करें कि उन्हें क्या पढ़ना पसंद है और क्या पढ़ना पसंद नहीं है। 5. कक्षा में थोड़ा समय शांति से स्वतंत्र पठन के लिए निकालें। इन पाँच बिंदुओं की समीक्षा करें। • आपके अनुसार आप इनमें से कौन-से काम पहले से ही करते आ रहे हैं? • आपके अनुसार आप इनमें से कौन-से काम अपनी कक्षा में और ज्यादा कर सकते हैं? • इन बिंदुओं को विकसित करने के लिए आपको क्या बदलाव करना पड़ेगा? • संभव है कि आप पहले से ही ये गतिविधियाँ हिन्दी में पठन के लिए कर रहे हैं।

- आप अंग्रेज़ी में पठन के लिए ये गतिविधियाँ किस प्रकार कर सकते हैं?

यह तय करें कि अगले एक महीने में आप अपनी कक्षा में कौन-सी गतिविधि विकसित करने की कोशिश करेंगे। संभव हो तो किसी अन्य शिक्षक से बात करें और अपनी कक्षा में यह परिवर्तन करने के लिए उनकी मदद लें। अपने अनुभव के बारे में अन्य शिक्षक से चर्चा करने से आपको स्वयं को प्रेरित रखने और कक्षा में सीखने के लिए आपके परिवर्तन के प्रभाव के बारे में सोचने में मदद मिलेगी। इस ईकाई के पठन कार्य, केस–स्टडी और गतिविधियाँ इस तरह तैयार की गई हैं, ताकि आपको शुरुआत करने में मदद मिले।

केस–स्टडी 1 में, शिक्षक अपनी कक्षा में पठन को प्रोत्साहित करने के लिए कुछ परिवर्तन करने की कोशिश करते हैं।

केस स्टडी **1:** श्री शंकर अपनी भूमिका के बारे में बताते हैं

श्री शंकर एक सरकारी विद्यालय में कक्षा पाँच को पढ़ाते हैं।

मैं एक ऐसे विद्यालय में पढ़ाता हूँ जहाँ विद्यार्थियों के परिवारों में कोई औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं है। मैं अंग्रेज़ी भाशा के बारे में आत्मविश्वासी नहीं हूँ इसलिए मैं केवल पाठ्यपुस्तक तक ही सीमित रहता था। वास्तव में मैं हिन्दी पढ़ने का बहुत भौकीन हूँ। मैं अखबार और पत्रिकाएँ व कभी-कभार कुछ कविताएँ पढ़ना पसंद करता हूँ। लेकिन मैं पढ़ने के आनंद के बारे में अपने विद्यार्थियों को नहीं समझा पा रहा था। मेरे *विद्यार्थी* पठन को केवल परीक्षाओं से ही जोड़कर देखते थे – अंग्रेज़ी में और हिन्दी में।

भास्कर मेरा एक *विद्यार्थी* है। वह एक बहुत अच्छा फुटबॉल खिलाड़ी है और डेविड बेकहम का बड़ा प्रशंसक है लेकिन उसका पठन कौशल बहुत सीमित है। पठन के पीरियड के दौरान वह पढ़ने के अलावा सब-कुछ करता था।

मैंने इस बारे में बहुत सोचा। मैं ऐसा क्या दे सकता हूँ जिससे उसके मन में पढ़ने की इच्छा जागे? मैं कुछ फुटबॉल पत्रिकाएँ और अखबारों के खेल पृष्ठ ले आया। मैंने उन्हें शेल्फ में खोलकर रख दिया। इन्हें देखते ही भास्कर इतना रोमांचित हो गया कि वह तुरंत एक पत्रिका उठाकर पढ़ने लगा। कुछ दिनों बाद मैंने देखा कि वह कुछ अन्य विद्यार्थियों के साथ अखबार पढ़ रहा था और मौसम की जानकारी देख रहा था। जब मैंने कहा कि वे लोग पत्रिकाओं में और अखबारों में कुछ अंग्रेज़ी शब्दों को ढूँढ सकते हैं तो उन्होंने इन शब्दों की खोज शुरू कर दी।

एक शिक्षक के रूप में, मैं उस गंभीर भूमिका को पूरी तरह नहीं समझता था, जो मैं स्वैच्छिक पठन के प्रति अपने विद्यार्थियों के दृष्टिकोण को प्रभावित करने के लिए निभा सकता था। अब मैं अपने विद्यार्थियों को यह समझाने की कोशिश करता हूँ कि मैं खुद भी एक पाठक हूँ। मैं अक्सर उन्हें यह बताता हूँ कि मैं घर में इन दिनों क्या पढ़ रहा हूँ। कभी-कभी यह अखबार या पत्रिका की कोई खबर होती है या कुछ ऐसा भी होता है, जो मैंने किसी विज्ञापन या बोर्ड पर पढ़ा हो। अब मैं विद्यार्थियों के साथ पठन के बारे में और उन्हें क्या पढ़ना पसंद है, इस बारे में गपशप के साथ शुरुआत करता हूँ।

विचार कीजिए

- क्या आपको लगता है कि कक्षा में पठन सामग्री के रूप में खेल पत्रिकाएँ और अखबार देना उचित है? क्यों या क्यों नहीं?
- आपको अंग्रेज़ी में या किसी भी भाषा में क्या पढ़ना पसंद है? कविताएँ, उपन्यास, जीवनियाँ, अखबार, जानकारी देने वाली पुस्तकें – या कुछ और?
- आपके अनुसार आपके विद्यार्थियों को अंग्रेज़ी में या किसी भी भाषा में क्या पढ़ने में मज़ा आता है?

- आपको या आपके विद्यार्थियों को जो भी पढ़ना पसंद है क्या उनमें से कोई भी पुस्तकें आपकी कक्षा में हैं? क्यों या क्यों नहीं?

2 पुस्तकों के लिए एक हिस्सा बनाना

केस–स्टडी *2* में, एक शिक्षक ने कक्षा में पठन वातावरण को सुधारने के लिए कुछ कदम उठाए हैं।

केस–स्टडी **2:** श्रीमती शांता ने पुस्तकों के लिए एक स्थान बनाया है

श्रीमती शांता सहशिक्षा वाले एक सरकारी प्राथमिक विद्यालय में कक्षा पाँच की शिक्षिका हैं।

मेरी कक्षा के अधिकाँश विद्यार्थियो के घरों में कोई किताबें नहीं हैं। हालांकि मेरे विद्यार्थियों को लाइब्रेरी के पीरियड के दौरान सप्ताह में एक बार विद्यालय की लाइब्रेरी से किताबें लेने का मौका मिलता था लेकिन पढ़ने में उनकी ज्यादा रुचि नहीं थी।

मैंने अपनी कक्षा के कमरे पर ध्यान दिया। इसमें मेरे विद्यार्थियों के पढ़ने के लिए बहुत ही कम किताबें थीं। इसके अलावा, चूंकि ये थोड़ी-सी किताबें एक आलमारी में रखी हुई थीं इसलिए अक्सर उन पर किसी की नज़र नहीं पड़ती थी। मैंने कुछ बदलाव करके देखना तय किया।

सबसे पहले मैंने कक्षा में किताबों की संख्या बढ़ाई। मैंने अपने साथी शिक्षकों से पूछा कि क्या उनके पास कोई अतिरिक्त किताबें हैं। मैंने अध्यापन और शिक्षण सामग्रियाँ खरीदने के लिए मिलने वाला अपना पूरा वार्षिक भत्ता किताबों पर खर्च करने का निर्णय लिया। मैंने राष्ट्रीय पुस्तक न्यास और बाल पुस्तक न्यास से बहुत-सी रोचक, सस्ती किताबें खरीदीं। अपने विद्यार्थियों की मदद से मैंने कॉपियों और पत्रिकाओं के चित्रों का उपयोग करके कुछ कहानी की किताबें भी बनाईं।

पुस्तकें चुनते और बनाते समय मैंने कोशिश की कि वे विद्यार्थियों को आकर्षित करने वाली हों। मैंने नए पाठकों के लिए चित्रों वाली पुस्तकें, पढ़ने-में-सरल पुस्तकें, किस्से और लोककथाएँ, जानकारीपरक पुस्तकें, चुटकुलों और पहेलियों की पुस्तकें, कविताओं की किताबें, कॉमिक्स (स्पाइडरमैन सहित), खेलों के बारे में किताबें और नई चीजें बनाने के बारे में बताने वाली किताबें शामिल कीं। मैंने विद्यालय की लाइब्रेरी से भी बच्चों की पत्रिकाएँ लीं। मैं उपदेशात्मक, 'नैतिक' कहानियों से बचने की कोशिश की क्योंकि अनुभव से मैं ये जानती थी कि वे बच्चों को आकर्षित नहीं करतीं। हालांकि मैंने इस बात का ध्यान रखा कि कुछ ऐसी कहानियां भी चुनी जाएं जिनसे कोई महत्वपूर्ण संदेश मिलता है। उदाहरण के लिए बाल पुस्तक न्यास का एक प्रकाशन है, जिसमें बताया गया है कि एक आदिवासी बालक को अन्य विद्यार्थियों और शिक्षक की संवेदनहीनता के कारण विद्यालय के शुरुआती दिनों में किस तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। एक अन्य पुस्तक है जिसमें एक *विद्यार्थी* को इसलिए डराया-धमकाया जाता है क्योंकि उसे हकलाने की समस्या है।

मेरा अगला काम अपनी कक्षा के एक कोने में एक 'छोटी लाइब्रेरी' तैयार करना था जिसमें कुछ खाने और पढ़ने का एक हिस्सा हो। मैंने विद्यार्थियों से सलाह मांगी कि इसे कहाँ बनाया जाए। शुरू में उन्हें लगा कि वह कमरा उस लिहाज से बहुत छोटा था लेकिन हमने जब पूरा फर्नीचर फिर से लगाया तो हम यह देखकर चकित रह गए कि सब-कुछ इसमें समा गया।

मैंने हमारी लाइब्रेरी के कोने में एक चटाई बिछाई क्योंकि ज्यादातर विद्यार्थियों को ज़मीन पर बैठकर पढ़ना ज्यादा आरामदायक लगता था। पठन को प्रोत्साहित करने के लिए मैंने पुस्तक विक्रेताओं से कुछ मुफ्त पोस्टर भी हासिल किए। एक कुर्सी भी रखी गई थी जिस पर बैठकर मैं या कोई अन्य *विद्यार्थी* कक्षा के सभी विद्यार्थियों को कुछ पढ़कर सुनाते थे (चित्र 1)।

चित्र **1** श्रीमती शांता की कक्षा की लाइब्रेरी।

विद्यार्थी इस कोने को ख़ास जगह कहने लगे। किताबों के इस कोने ने उन्हें यह संदेश दिया कि पुस्तकें इतनी मूल्यवान हैं कि उनके लिए कक्षा में कुछ जगह अलग से बनाई जानी चाहिए। विद्यार्थियों ने उस कोने में बैठने के लिए और ज्यादा समय देने की मांग की और पुस्तकें पढ़ते समय खाने की अनुमति देने का अनुरोध किया।

विचार कीजिए

- श्रीमती शांता की कक्षा की लाइब्रेरी के लिए पठन सामग्रियों के स्त्रोत क्या थे?
- क्या आपके पास इनमें से कोई स्त्रोत उपलब्ध हैं?
- क्या आपको लगता है कि पढ़ते समय विद्यार्थियों को खाने की अनुमति देना सही है? क्यों या क्यों नहीं?

गतिविधि 2: अपनी कक्षा को देखें एक नियोजन गतिविधि
अपनी कक्षा को देखें और इस बारे में सोचें कि एककोने में कक्षा की एक छोटी-सी लाइब्रेरी बनाने के लिए आप किस तरह स्थान और फर्नीचर को व्यवस्थित कर सकते हैं, जैसा कि चित्र 2 में दर्शाया गया है। इनकी एक सूची बनाएँ: • जो पुस्तकें आपको स्थानीय लाइब्रेरी से मिल सकती हैं • जो पुस्तकें आप तैयार कर सकते हैं • जो पत्रिकाएँ और अखबार आप अन्य शिक्षकों, मित्रों और परिवारजनों से प्राप्त कर सकते हैं • पुस्तकों के बारे में पोस्टर • कोई भी अन्य पठन सामग्री।   चित्र **2** कक्षा में पुस्तकों वाले हिस्से का एक उदाहरण। अन्य शिक्षकों से इस बारे में बात करें कि किस तरह आप लोग साथ मिलकर पठन के लिए साझा संसाधन बना सकते हैं।

रुचियों और क्षमताओं की एक श्रेणी के लिए संसाधनों के विकास के बारे में अधिक जानकारी के लिए संसाधन 1, 'सभी को शामिल करना' देखें।

3 विद्यार्थियों का पठन

अब निम्नलिखित गतिवधियों को आज़माकर देखें।

गतिविधि 3: पठन के बारे में अपने विद्यार्थियों से बात करें

पहले गतिविधि 2 पूरी करें और उन पुस्तकों या अन्य पठन सामग्रियों की सूची बनाएँ जिन्हें एकत्रित करके आप कक्षा की एक 'मिनी-लाइब्रेरी' शुरू कर सकते हैं।

इस पाठ में, अपने विद्यार्थियों को बताएँ कि आप कक्षा में पुस्तकों का एक हिस्सा बनाना चाहते हैं। बोर्ड पर निम्नलिखित प्रश्न लिखें:

- आपने कौन-सी पुस्तकें पढ़ी हैं?
- आपको इनमें से कौन-सी अच्छी लगीं, और क्यों?
- आप किस तरह की पुस्तकें पढ़ना चाहेंगे?
- क्या ऐसी अन्य बातें भी हैं, जो आप पढ़ना चाहेंगे, शायद किसी कंप्यूटर पर?

विद्यार्थियों को जोड़ियों में बाँटें और उनसे कहें कि वे आपके द्वारा बोर्ड पर लिखे गए प्रश्न एक-दूसरे से पूछें। इसके लिए उन्हें कुछ मिनटों का समय दें और इसके बाद छात्रों को पुनः एक साथ बैठायें। इन प्रश्नों के बारे में उनके उत्तर जानें और उनके विचारों को बोर्ड पर लिखें।

पाठ के बाद उनके विचारों को इकट्ठा करें। उनके विचारों और आपकी सूची को मिलाकर देखें। क्या उनके विचार आपके विचारों से मेल खाते हैं? आप किस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं?

यह जानकारी आपकी मदद कर सकती है ताकि आप पाठक के रूप में प्रत्येक *विद्यार्थी* की आवश्यकता के अनुसार उसकी सहायता कर सकें?

अगले कुछ सप्ताहों के दौरान पढ़ने की सामग्रियों का अपना छोटा-सा संकलन बनावें।

क्या आप लाइब्रेरी के लिए कोई नियम बनाएँगे? क्या आप लाइब्रेरी के बारे में अभिभावकों को बताएँगे? आप उनसे किस प्रकार मदद माँग सकते हैं? शायद आप विद्यार्थियों से अपने इस पुस्तकों वाले हिस्से के उदघाटन के लिए एक छोटा-सा आयोजन करने की योजना बनाने को कह सकते हैं।

आप इस पठन कोने को कई तरह से उपयोग कर सकते हैं। अलग अलग तरह की पठन सामग्रियों को चुनकर आप विद्यार्थियों की विविधतापूर्ण पसंद और आवश्यकताओं को पूरा कर सकते हैं। उदाहरण के लिए हो सकता है कि किसी मेधावी *विद्यार्थी* को ऐसे चुनौतीपूर्ण पाठ्य को पढ़ना रोचक लगे जो उसके लिए अन्यथा उपलब्ध न हो। इसी तरह विद्यार्थियों को यदि उनके पठन स्तर के अनुरूप पाठ्य-सामग्री प्राप्त होगी तो इससे उन विद्यार्थियों का आत्मविश्वास बढ़ेगा जिन्हें पढ़ने में कठिनाई महसूस होती है। साथी शिक्षको और बड़ी आयु वाले विद्यार्थियों के साथ मिलकर आप उनके पठन के लिए वर्कशीट भी तैयार कर सकते हैं जो उन्हें पढ़ने में सहायक होगी।

एक पठन कोना कक्षा के प्रबंधन में भी आपकी मदद करेगा। यदि आपकी कक्षा ज़्यादा विद्यार्थियों वाली है या आप एक से ज्यादा ग्रेड वाली कक्षा को पढ़ाते हैं तो एक समूह को कोने में स्वतंत्र पठन का कार्य दिया जा सकता है जबकि आप दूसरे समूह के साथ काम कर सकते हैं और बाद में इनकी अदलाबदली की जा सकती है। यदि विद्यार्थियों को इसकी आदत नहीं है तो उन्हें अनुशासित पद्धति में स्वतंत्र रूप से कार्य करने में थोड़ा समय लगेगा। लेकिन निर्धारित नियमों और आरंभिक मार्गदर्शन के द्वारा उन्हें ऐसा करना सिखाया जा सकता है।

वीडियो: सभी की सहभागिता

अगली गतिविधि ऊंची आवाज़ में पढ़ने से संबंधित है।

आप यह जानते होंगे कि विद्यार्थियों को अपने शिक्षक की नकल करना बहुत अच्छा लगता है। आप जो करते और बोलते हैं वे भी वही करेंगे और बोलेंगे। जब आप ऊंची आवाज़ में पढ़ते हैं तो आप पठन के आनंद का एक मॉडल होते हैं। ऊंची आवाज़ में पढ़ने और विद्यार्थियों से भी ऊंची आवाज़ में पढ़वाने से आपको और आपके विद्यार्थियों को अपना अंग्रेज़ी उच्चारण सुधारने में मदद मिलेगी।

गतिविधि 4: अभिव्यक्ति के साथ ऊंची आवाज़ में पढ़ना
अंग्रेज़ी की कोई लघुकथा या कविता चुनें जिससे आप अच्छी तरह परिचित हैं और आपको लगता है कि वह विद्यार्थियों को भी पसंद आएगी। यह पाठ्यपुस्तक से ही होना आवश्यक नहीं है। वह कहानी या कविता ऊंची आवाज़ में कक्षा को सुनाएँ। अब एक *विद्यार्थी* को बुलाएँ और वह कहानी शेष कक्षा को पढ़कर सुनाने को कहें (चित्र 3)। *विद्यार्थी* को पुस्तक पकड़ने दें और शिक्षक की तरह अभिनय करने दें। हो सकता है कि *विद्यार्थी* ने पाठ्य-सामग्री का कुछ भाग या पूरी सामग्री याद कर ली हो, इसमें कोई हर्ज नहीं है – *विद्यार्थी* को आपकी अभिव्यक्ति और उत्साह की नकल करने दें। अन्य विद्यार्थियों के साथ बैठें और उन्हें दिखाएँ कि एक अच्छा श्रोता कैसा होना चाहिए। यदि पठन में कोई सामूहिक भाग भी हैं तो इसमें विद्यार्थियों के साथ शामिल हों।   चित्र **3** एक *विद्यार्थी* अन्य विद्यार्थियों और शिक्षक को एक कहानी पढ़कर सुनाता है। ऊंची आवाज़ में पढ़ने की इस गतिविधि के साथ आपको कोई भाषा अभ्यास नहीं जोड़ना चाहिए। केवल पढ़ने के आनंद और खुशी पर ध्यान दें। जब आप विद्यार्थियों को कक्षा में ऊंची आवाज़ में पढ़ने देते हैं और आप श्रोताओं के बीच बैठते हैं तो आप पठन कौशल और व्यवहार का निरीक्षण कर सकते हैं। क्या *विद्यार्थी* पुस्तकों को ध्यानपूर्वक संभालते हैं? वे पढ़कर सुना रहे हैं या याद करके दोहरा रहे हैं अथवा दोनों को मिलाकर कर रहे हैं? क्या अन्य *विद्यार्थी* पढ़ रहे हैं और प्रतिसाद दे रहे हैं?

4 विद्यार्थियो के शब्दों और चित्रों की पुस्तकें तैयार करना

अब निम्नलिखित गतिविधि करके देखें।

गतिविधि 5: विद्यार्थियों के शब्दों और चित्रों की पुस्तकें तैयार करना

यह गतिविधि कक्षा एक से चार के विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त है लेकिन आप बड़ी कक्षाओं के लिए इसे अनुकूलित कर सकते हैं।

विद्यार्थियों के स्वयं के शब्दों का उपयोग करके पुस्तकें तैयार कीजिये। यदि आप ज़्यादा विद्यार्थियो वाली कक्षा को पढ़ाते हैं तो आप कई दिनों या एक सप्ताह में एक बड़ी पुस्तक बना सकते हैं। वैकल्पिक रूप से आप प्रत्येक *विद्यार्थी* के लिए एक पुस्तक बना सकते हैं।

- आपको पत्रिकाओं के चित्र काटने पड़ेंगे या विद्यार्थियो द्वारा बनाए गए चित्रों की और साथ ही गोंद, कागज़ और पेन की आवश्यकता पड़ेगी।
- विद्यार्थियो को बताएँ कि वे अंग्रेज़ी में एक पुस्तक बनाने वाले हैं।
- विद्यार्थियो से हिन्दी में या उनके घर की भाषा में उनके पसंदीदा शब्द के बारे में सोचने को कहें। वे अपना शब्द अपने दोस्त को बता सकते हैं। उनसे उस शब्द का चित्र बनाने या किसी पत्रिका से उसका चित्र काटकर एक कागज़ के टुकड़े पर चिपकाने को कहें।
- उनके पसंदीदा शब्दों को बोर्ड पर हिन्दी और अंग्रेज़ी में लिखें। साथ मिलकर अंग्रेज़ी में वह शब्द बोलने का अभ्यास करें और ड्राइंग या चित्रों कोदेखें।
- विद्यार्थियों से उस शब्द के चित्र के आगे अंग्रेज़ी में वह शब्द लिखने को कहें। जो *विद्यार्थी* अभी भी वर्ण बनाने में असमर्थ हैं, उनके लिए आप शब्द लिख दें।
- विद्यार्थियों के कागज़ लें और 'We Can Read!' शीर्षक वाली एक पुस्तक तैयार करें। पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ पर एक अलग शब्द होना चाहिए जिसके साथ प्रत्येक *विद्यार्थी* की एक ड्राइंग या चिपकाया हुआ चित्र होना चाहिए। प्रत्येक पृष्ठ पर आप प्रत्येक छात्र के लिए अंग्रेज़ी में एक कैप्शन लिखते हैं, जिस पर लिखा होगा, उदाहरण के लिए:
    - Mehak can read 'ice cream'.
    - Susheela can read 'festival'.
    - Munir can read 'car'.
    - Deepti can read 'computer'.

पुस्तकें पढ़ें और साथ मिलकर अंग्रेज़ी का अभ्यास करें। अभिभावकों को कक्षा में आमंत्रित करें ताकि छात्र अपने माता-पिता को वह पुस्तक पढ़कर सुना सकें। अपनी कक्षा की लाइब्रेरी बनाना और पठन पर्यावरण को आगे बढ़ाना जारी रखें।

आप इस गतिविधि को इस तरह से कर सकते हैं**:**

- भोजन, परिवहन, वनस्पति, परिवार या शरीर के अंगों आदि जैसे अलग अलग विषयों पर 'I Can Read' पुस्तकों का एक संग्रहणबनाकर

अंग्रेज़ी में अलग अलग वाक्य संरचनाओं का अभ्यास करने के लिए लेखन को बदलकर उदाहरण के लिए, पुस्तक का शीर्षक 'What Do You Like to Eat?' हो सकता है और पृष्ठों पर 'Munir likes to eat rice', 'Deepti likes to eat mango' आदि लिखा हो सकता है।

विचार कीजिए

- आप इस गतिविधि को बड़ी कक्षाओं के लिए उपयुक्त बनाने के लिए क्या करेंगे? क्या आप विद्यार्थियों को उनके विषय स्वयं चुनने देंगे? आप किस शब्दावली पर ध्यान केंद्रित करेंगे?
- आप कक्षा सात के छात्र से उसकी स्वयं की पुस्तक में या साझा बड़ी पुस्तक में कितनी अंग्रेज़ी लिखने की उम्मीद करेंगे?

5 सारांश

इस इकाई में इस बात पर ध्यान दिया गया है कि आप अपनी कक्षा में किस तरह सकारात्मक पढ़ने का वातावरण बना सकते हैं।

किसी भी भाषा में पढ़ना स्वतंत्र सीखने वालों के निर्माण और उनकी शैक्षणिक उपलब्धि को बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षा के सभी स्तरों पर 'पढ़ना' किसी भी छात्र की सफलता की बुनियाद है। अच्छी पठन आदतों का विकास करना किसी भी बच्चे के भविष्य के लिए अनिवार्य है – न केवल शैक्षणिक भविष्य के लिए, बल्कि दैनिक जीवन के लिए भी। अच्छी पठन आदतों वाले छात्र अपने आस-पास की दुनिया के बारे में ज्यादा सीखते हैं और उनमें भाषा के प्रति व अन्य संस्कृतियों के प्रति रुचि विकसित होती है। पठन के कारण प्रश्न पूछने और उत्तर जानने की जिज्ञासा जागती है, जिससे विद्यार्थियों के ज्ञान में लगातार वृद्धि होती है।

इस विषय पर अन्य आरंभिक अंग्रेजी अध्यापक विकास इकाइयाँ हैं:

- *अंग्रेज़ी के वर्ण और ध्वनियाँ*
- *कथावाचन*
- *साझा पठन*
- *पाठ की योजना तैयार करना*
- *पठन को विकसित करना और उस पर निगरानी रखना।*

संसाधन

संसाधन 1: सभी की सहभागिता या सभी को शामिल करना

'सभी की सहभागिता या सभी को शामिल करें' का क्या अर्थ है?

संस्कृति और समाज की विविधता कक्षा में प्रतिबिंबित होती है। विद्यार्थियों की भाषाएं, रुचियां और योग्यताएं अलग-अलग होती हैं। विद्यार्थी विभिन्न सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमियों से आते हैं। हम इन विभिन्नताओं को अनदेखा नहीं कर सकते हैं; वास्तव में हमें उन्हें सकारात्मक रूप से देखना चाहिए क्योंकि हमारे लिए ये एक दूसरे के बारे में तथा हमारे अनुभव से परे के संसार को जानने और समझने के लिए माध्यम का काम कर सकते हैं। सभी विद्यार्थियों को शिक्षा प्राप्त करने एवं अपनी स्थिति, योग्यता और पृष्ठभूमि से इतर जाकर सीखने का अवसर हासिल करने का अधिकार है और इस बात को भारतीय संविधान में एवं अंतरराष्ट्रीय बाल अधिकारों में मान्यता प्राप्त है। 2014 में राष्ट्र के नाम अपने पहले संबोधन में प्रधानमंत्री मोदी ने भारत के सभी नागरिकों के मूल्यों, मान्यताओं को महत्व दिए जाने पर बल दिया भले ही किसी नागरिक की जाति, लिंग या आय कुछ भी क्यों न हो। इस संबंध में विद्यालयों और अध्यापकों की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका है।

हम सभी के पास उन दूसरे लोगों को लेकर पूर्वाग्रह और विचार होते हैं जिनसे हमारा परिचय या साक्षात्कार नहीं हुआ हो सकता है। एक अध्यापक के रूप में आपके पास प्रत्येक विद्यार्थी के शैक्षिक अनुभव को सकारात्मक या नकारात्मक ढंग से प्रभावित करने की शक्ति होती है। चाहे जानबूझकर

हो या अनजाने में आपके निहित पूर्वाग्रहों और विचारों का इस बात पर अवश्य प्रभाव होगा कि आपके विद्यार्थी कितनी बराबरी के साथ सीख रहे हैं। आप अपने विद्यार्थियों को असमान व्यवहार से सुरक्षित रहने के लिए कदम उठा सकते हैं।

आपके द्वारा अधिगम में सभी की सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए तीन प्रमुख सिद्धांत

- ध्यान देना:– प्रभावी अध्यापक चौकस, अनुभवी एवं संवेदनशील होते हैं; वे अपने विद्यार्थियों में होने वाले बदलावों पर *ध्यान* देते हैं। यदि आप चौकस हैं तो आप उन बातों पर ध्यान देंगे जब एक विद्यार्थी कुछ अच्छा करता है, जब उसे सहायता की आवश्यकता होती है और जब वह दूसरों के साथ जुड़ता है। आप अपने विद्यार्थियों में होने वाले परिवर्तनों का भी अनुभव कर सकते हैं जो उनकी घरेलू परिस्थितियों या अन्य समस्याओं के चलते दिख सकते हैं। सभी को शामिल करने के लिए दैनिक रूप से अपने विद्यार्थियों पर, खास तौर पर उपेक्षित या प्रतिभागिता करने में असहज महसूस कर सकने वाले विद्यार्थियों पर ध्यान देने की आवश्यकता होती है।
- आत्मसम्मान पर ध्यान केंद्रित करना:– अच्छे नागरिक वे होते हैं जो अपने स्वत्व को लेकर सहज होते हैं। उनमें आत्मसम्मान की भावना होती है, उन्हें अपनी शक्तियों और कमजोरियों का पता होता है और उनमें व्यक्तियों की पृष्ठभूमि के प्रति पूर्वाग्रह रखे बिना सकारात्मक संबंध स्थापित करने की योग्यता होती है। वे स्वयं का और दूसरों का सम्मान करते हैं। एक अध्यापक के रूप में, आपका युवा विद्यार्थियों के आत्मसम्मान पर महत्वपूर्ण प्रभाव हो सकता है; अपनी इस शक्ति के बारे में जानें और प्रत्येक विद्यार्थी के अंदर आत्मसम्मान विकसित करने के लिए उसका प्रयोग करें।
- लचीलापन:– यदि कोई विधि या गतिविधि आपकी कक्षा में किसी विशिष्ट विद्यार्थी, समूह या व्यक्ति के लिए काम नहीं कर रही है तो अपनी योजनाओं में बदलाव करने या गतिविधि को रोकने के लिए तैयार रहें। लचीली दृष्टि रखने से आप समायोजन करने में सक्षम होंगे जिससे आप अधिक प्रभावी ढंग से सभी विद्यार्थियों को सहभागी बना सकते हैं।

आपके द्वारा हर समय अपनाए जा सकने वाले दृष्टिकोण

- अच्छा व्यवहार प्रस्तुत करना:– जातीयता, धर्म या लिंग का भेदभाव किए बिना अपने विद्यार्थियों के साथ अच्छे ढंग से व्यवहार कर उनके सामने आदर्श प्रस्तुत करें। सभी विद्यार्थियों के साथ सम्मानजनक व्यवहार करें और अपने शिक्षण के माध्यम से यह बात स्पष्ट करें कि आप सभी विद्यार्थियों को एक समान महत्व देते हैं। उन सभी के साथ सम्मान से बात करें उनके विचार उपयुक्त होने पर उसे महत्व दें और उन्हें सभी के लिए लाभप्रद कार्य करने के द्वारा कक्षा के प्रति उत्तरदायित्व का भाव जाग्रत करें।
- अधिक उम्मीदें:– योग्यता सीमित नहीं होती है यदि विद्यार्थियों को उचित सहायता मिले तो वे सीख सकते हैं और प्रगति कर सकते हैं। यदि किसी विद्यार्थी को आपके द्वारा कक्षा में की जा रही गतिविधि समझने में मुश्किल हो रही है तो ऐसा न समझें कि वे अब कभी भी जान और समझ नहीं सकते। एक अध्यापक के रूप में आपकी भूमिका बेहतरीन ढंग से प्रत्येक छात्र को सीखने में मदद करने की होनी चाहिए। यदि आप अपनी कक्षा के प्रत्येक विद्यार्थी से अधिक उम्मीद करते हैं तो आपके विद्यार्थियों में यह प्रबल धारणा बन सकती है कि यदि वे डटे रहते हैं तो अधिक सीखेंगे। अधिक उम्मीदें व्यवहार में भी दिखनी चाहिए। सुनिश्चित करें कि उम्मीदें स्पष्ट हैं और विद्यार्थी एक दूसरे से सम्मानजनक व्यवहार करते हैं।
- अपने शिक्षण में विविधता लाएं:– विद्यार्थी अलग अलग तरीकों से सीखते हैं। कुछ विद्यार्थियों को लिखना पसंद होता है; तो कुछ अन्य को अपने विचार स्पश्ट करने के लिए माइंड मैप या चित्र बनाना अच्छा लगता है। कुछ विद्यार्थी अच्छे श्रोता होते हैं कुछ अन्य तब सर्वश्रेष्ठ ढंग से सीखते हैं जब उन्हें अपने विचार के बारे में बात करने का अवसर प्राप्त होता है। आप हर समय सभी विद्यार्थियों के अनुरूप नहीं कर सकते हैं लेकिन आप अपने शिक्षण में विविधता पैदा कर सकते हैं और विद्यार्थियों को उनके द्वारा किए जा सकने के लिए कुछ अधिगम गतिविधियों में से अपना विकल्प चुनने का अवसर दे सकते हैं।
- रोजमर्रा की जिंदगी से अधिगम को जोड़ें:– कुछ विद्यार्थियों को वे बातें अपने रोजमर्रा की जिंदगी के लिए अप्रासंगिक लग सकती हैं जिन्हें आप उनसे सीखने के लिए कहते हैं। आप इसे यह सुनिश्चित करने के द्वारा संबोधित कर सकते हैं कि जब भी संभव हुआ आप उस अधिगम को उनके लिए प्रासंगिक संदर्भ से जोड़ कर दिखाएंगे और आप उनके खुद के अनुभव से उदाहरण द्वारा स्पश्ट करेंगे।
- भाषा का उपयोग:– अपने द्वारा प्रयोग की जाने वाली भाषा को लेकर सचेत रहें। सकारात्मक और प्रशंसात्मक भाषा का प्रयोग करें विद्यार्थियों का उपहास न उड़ाएं। हमेशा उनके व्यवहार पर टिप्पणी करें न कि स्वयं उन पर। 'तुम मुझे आज परेशान कर रहे हो' जैसे वाक्य बेहद व्यक्तिगत प्रकार के होते हैं, इसके बजाय आप इसे 'आज मुझे तुम्हारा व्यवहार कष्टप्रद लग रहा है। क्या कोई कारण है जिसके चलते ध्यान केंद्रित करने में तुम्हें मुश्किल हो रही है?' के रूप में बेहतर ढंग से व्यक्त कर सकते हैं।
- रूढ़िवादिता को चुनौती दें:– उन संसाधनों का पता लगाएं और प्रयोग करें जो लड़कियों को गैर-रूढ़िवादी भूमिकाओं में प्रस्तुत करता है या वैज्ञानिक आदि अनुकरणीय महिलाओं को विद्यालय में आने के लिए निमंत्रित करें। लिंग को लेकर आप अपनी खुद की रूढ़िवादिता के प्रति सचेत रहें; आप जानते हैं कि

लड़कियां खेलकूद के क्षेत्र में भी भाग लेती हैं वहीं लड़के देखभाल वाले कार्यों में भी पाए जाते हैं, लेकिन प्रायः हम इन्हें अलग ढंग से व्यक्त करते हैं, क्योंकि हम इसी तरीके से समाज में बात करने के अभ्यस्त होते हैं।

- एक सुरक्षित, सुखद अधिगम वातावरण का निर्माण करें:– यह जरूरी है कि सभी विद्यार्थी विद्यालय में सुरक्षित और प्रसन्नचित्त महसूस करें। आप ऐसी स्थिति में होते हैं जिसमें आप अपने विद्यार्थियों को एक दूसरे के लिए परस्पर सम्मान और मित्रतापूर्ण व्यवहार के लिए प्रोत्साहित कर प्रसन्नचित्त महसूस करा सकें। इस बात पर विचार करें कि अलग अलग विद्यार्थियों के लिए विद्यालय और कक्षा को किस तरह विशिष्ट बनाया जा सकता है। इस बारे में सोचें कि उन्हें कहां बैठने के लिए कहा जाना चाहिए और सुनिश्चित करें कि दृश्य या श्रवण बाधा या शारीरिक अक्षमता वाला कोई भी विद्यार्थी अपना पाठ पढ़ने और सीखने के लिए कहां बैठ सकता है। इस बात की जांच करें कि शर्मीले स्वभाव या आसानी से विचलित होने वाले विद्यार्थियों को आप किस तरह आसानी से अपनी गतिविधियों में शामिल कर सकते हैं।

विशिष्ट शिक्षण दृष्टिकोण

ऐसे कई विशिष्ट दृष्टिकोण हैं जिनसे आपको सभी विद्यार्थियों को शामिल करने में मदद मिलेगी। इन्हें अन्य प्रमुख संसाधनों में और अधिक विस्तार से वर्णित किया गया है लेकिन यहां संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है:

- प्रश्न पूछना:– यदि आप विद्यार्थियों को हाथ खड़े करने के लिए कहते हैं तो हर बार वही विद्यार्थी जवाब देने को तैयार होते हैं। ऐसे कई अन्य तरीके भी हैं जिनसे जवाबों के बारे में सोचने और प्रश्नों पर जवाब देने के लिए अधिक विद्यार्थियों को शामिल किया जा सकता है। आप विशिष्ट विद्यार्थियों से प्रश्न पूछ सकते हैं। कक्षा से कहें कि आप यह निर्णय लेंगे कि कौन उत्तर देगा फिर आप सामने बैठे हुए विद्यार्थियों की अपेक्षा कक्षा में पीछे या किनारे में बैठे विद्यार्थियों से प्रश्न पूछें। विद्यार्थियों को 'सोचने के लिए समय' दें और विशिष्ट विद्यार्थियों से अपना योगदान देने के लिए कहें। विश्वास का निर्माण करने के लिए जोड़ी या समूहकार्य का प्रयोग करें ताकि आप संपूर्ण कक्षा चर्चा में सभी को शामिल किया जा सकें।
- मूल्यांकन:– रचनात्मक मूल्यांकन के लिए तकनीकों को विकसित करें इनसे आपको हरेक छात्र को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलेगी। छिपी प्रतिभाओं और खामियों को उजागर करने के लिए आपको रचनात्मक होने की जरूरत है। कतिपय विद्यार्थियों एवं उनकी योग्यताओं के बारे में सामान्यीकृत विचारों के कारण कुछ धारणाएं बन जाती हैं जबकि रचनात्मक मूल्यांकन आपको सटीक जानकारी देगा। तब आप उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं पर प्रतिसाद देने के लिए बेहतर स्थिति में होंगे।
- समूह कार्य एवं जोड़ी में कार्य:– सभी विद्यार्थियों को शामिल करने और उन्हें एक दूसरे को महत्व देने के लिए प्रोत्साहित करने के लक्ष्य को ध्यान में रखकर इस बात पर सावधानीपूर्वक विचार करें कि किस तरह आप अपनी कक्षा को समूह में विभाजित कर सकते है या उनमें जोड़े बना सकते हैं। सुनिश्चित करें कि सभी विद्यार्थियों को एक दूसरे से सीखने और अपनी सीखी बातों पर विश्वास का निर्माण करने के लिए अवसर प्राप्त है। कुछ विद्यार्थियों में एक छोटे समूह में अपने विचारों को व्यक्त करने और प्रश्न पूछने के लिए आत्मविश्वास होगा किंतु हो सकता है कि संपूर्ण कक्षा के सामने उन्हें अपने को खड़ा करने में झिझक हो।
- विशिष्टीकरण:– अलग अलग समूहों के लिए अलग अलग कार्य निर्दिष्ट करने से विद्यार्थियों को अपने सीखें हुये ज्ञान जगह से शुरू करने और आगे बढ़ने में मदद मिलेगी। समाप्ति रहित कार्य निर्धारित करने से सभी विद्यार्थियों को सफल होने का अवसर प्राप्त होगा। विद्यार्थियों को विभिन्न कार्यों में विकल्प प्रदान करने से उन्हें उस कार्य के प्रति उत्तरदायित्व का अहसास करने और अपने अधिगम के लिए जवाबदेही लेने में मदद मिलेगी। व्यक्तिगत अधिगम आवश्यकताओं का ध्यान रखना कठिन होता है, खास तौर पर बड़ी कक्षा में लेकिन अलग अलग कार्यों और गतिविधियों का उपयोग कर इसे किया जा सकता है।

अतिरिक्त संसाधन

- Children's Book Trust India: http://www.childrensbooktrust.com/
- Karadi Tales: http://www.karaditales.com/
- National Book Trust India: http://www.nbtindia.gov.in/
- NCERT textbooks: http://www.ncert.nic.in/NCERTS/textbook/textbook.htm
- Teachers of India classroom resources: http://www.teachersofindia.org/en

संदर्भ/संदर्भग्रंथ सूची

Bromley, H. (2000) *Book-based Reading Games*. London: Centre for Literacy in Primary Education.

Bryant, P. and Nunes, T (eds) (2004) *Handbook of Children's Literacy*. Dordrecht: Kluwer Academic Publishers.

Dombey, H. and Moustafa, M. (1998) *Whole to Part Phonics: How Children Learn to Read and Spell*. London: Centre for Literacy in Primary Education.

Goswami U. (2010a) 'Phonology, reading and reading difficulties', in Hall, K., Goswami, U., Harrison, C., Ellis, S. and Soler, J. (eds) *Interdisciplinary Perspectives on Learning to Read*. London: Routledge.

Goswami U. (2010b) 'A psycholinguistic grain size view of reading acquisition across languages', in Brunswick, N., McDougall, S. and Mornay-Davies, P. (eds) *The Role of Orthographies in Reading and Spelling*. Hove: Psychology Press.

Graham, J. and Kelly, A. (2012) *Reading under Control: Teaching Reading in the Primary School*, 3rd edn. London: Routledge.

Hall, K., Goswami, U., Harrison, C., Ellis, S. and Soler, J. (eds) (2010) *Interdisciplinary Perspectives on Learning to Read: Culture, Cognition and Pedagogy*. London: Routledge.

अभिस्वीकृतियाँ

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस (http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/) के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है। नीचे दी गई सामग्री मालिकाना हक की है तथा इस परियोजना के लिए लाइसेंस के अंतर्गत ही उपयोग की गई है, तथा इसका Creative Commons लाइसेंस से कोई वास्ता नहीं है। इसका अर्थ यह है कि इस सामग्री का उपयोग अननुकूलित रूप से केवल TESS-India परियोजना के भीतर किया जा सकता है और किसी भी बाद के OER संस्करणों में नहीं। इसमें TESS-India, OU और UKAID लोगो का उपयोग भी शामिल है।

इस यूनिट में सामग्री को पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति के लिए निम्न स्रोतों का कृतज्ञतापूर्ण आभार:

चित्र सुमन भाटिया के सौजन्य से। *(Images are courtesy of Suman Bhatia.)*

कॉपीराइट के स्वामियों से संपर्क करने का हर प्रयास किया गया है। यदि किसी को अनजाने में अनदेखा कर दिया गया है, तो पहला अवसर मिलते ही प्रकाशकों को आवश्यक व्यवस्थाएं करने में हर्ष होगा।

वीडियो (वीडियो स्टिल्स सहित): भारत भर के उन अध्यापक शिक्षकों, मुख्याध्यापकों, अध्यापकों और विद्यार्थियों के प्रति आभार प्रकट किया जाता है जिन्होंने उत्पादनों में दि ओपन यूनिवर्सिटी के साथ काम किया है।